अम्बे जी कि आरती

ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी

तुम को निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी. ॐ जय अम्बे...

मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमद को

उज्जवल से दो नैना चन्द्र बदन नीको. ॐ जय अम्बे...

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे

रक्त पुष्प दल माला कंठन पर साजे. ॐ जय अम्बे...

केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी

सुर-नर मुनिजन सेवत तिनके दुखहारी. ॐ जय अम्बे...

कानन कुण्डल शोभित नासग्रे मोती

कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति. ॐ जय अम्बे...

शुम्भ निशुम्भ विडारे महिषासुर धाती

धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती

चण्ड - मुंड संहारे सोणित बीज हरे

मधु कैटभ दोऊ मारे सुर भयहीन करे.

ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी

www.totalbhakti.com

आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी. ॐ जय अम्बे...

चौसठ योगिनी मंगल गावत नृत्य करत भैरु

बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरु. ॐ जय अम्बे...

तुम ही जग की माता तुम ही हो भर्ता

भक्तन की दुःख हरता सुख सम्पत्ति कर्ता

भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी

मन वांछित फ़ल पावत सेवत नर-नारी. ॐ जय अम्बे...

कंचन थार विराजत अगर कपूर बाती

श्रीमालकेतु में राजत कोटि रत्न ज्योति

श्री अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावे

कहत शिवानंद स्वामी सुख संपत्ति पावे.

www.totalbhakti.com